लोक स्वास्थ्य शिक्षा माला - ८

सूई
के बारे में
सही जानकारी

शहीद अस्पताल, दल्ली-राजहरा

प्रकाशन काल : अगस्त 1991

शहीद अस्पताल की
स्वास्थ्य पत्रिका "स्वास्थ्य संगवारी" का एक अंक पर आधारित।

आभार :

❀ जहां डाक्टर न हो, ग्राम स्वास्थ्य रक्षा पुस्तक – डेविड वर्नर

❀ पिचकारी, नी दादा – एकलव्य, देवास

❀ निषिद्ध ओषुध – ड्रग एक्शन फोरम, पश्चिम बंग

कोई भी व्यक्ति या संस्था लोगों में स्वास्थ्य शिक्षा फैलाने के लक्ष्य से इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरीके से इस्तेमाल कर सकता है।

सहायता राशि : 2 रुपये

वार्षिक चन्दा : 18 रुपये (6 अंक व डाक खर्च)

प्रकाशक : शहीद अस्पताल, दल्ली-राजहरा
दुर्ग (म. प्र.) 491 228

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस, बालोद

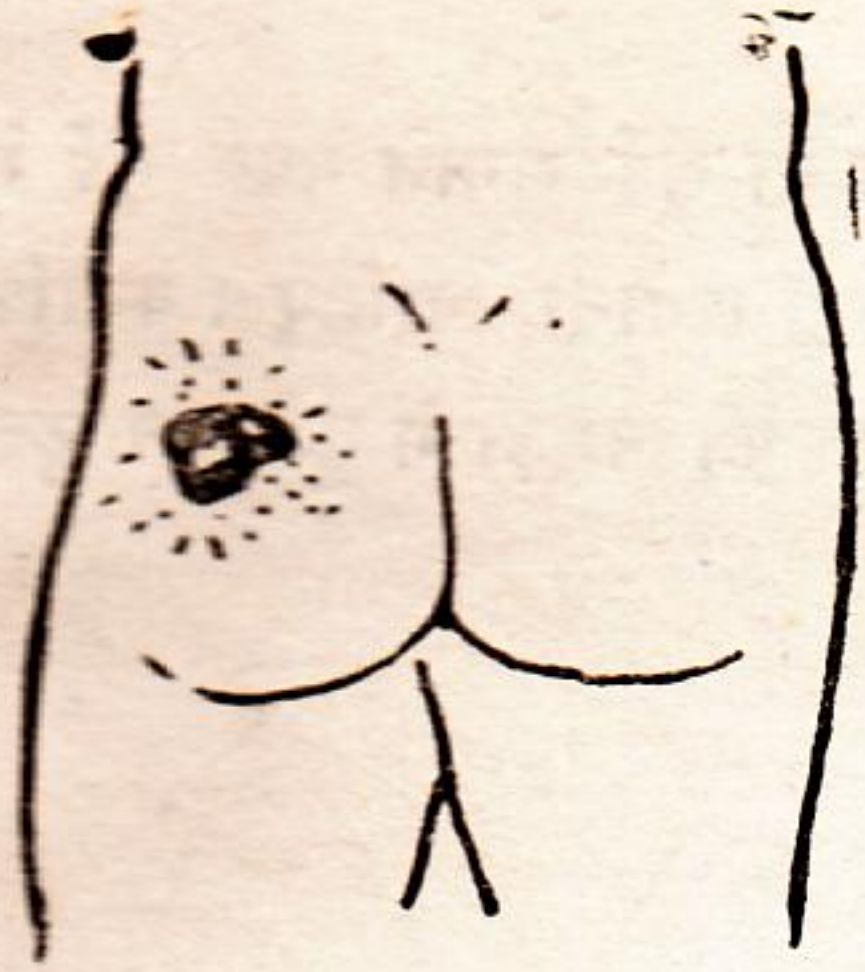

यह किसी मरीज का नितम्ब का चित्र है, जो करीब एक माह पहले गांव के किसी डाक्टर से कमर पर ताकतो सूई लगवाया था। सूई की जगह पर फोड़ा बन गया। फोड़ा काटना पड़ा, महीनों तक घाव की पट्टी चलती रही।

फोड़ा क्यों बना ?

कुछ रोगाणु शरीर में घुसनें पर फोड़ा बनता है। ये रोगाणु सूई के साथ शरीर में पहुंचे थे।

नियम के मुताबिक सूई लगाने से पहले सूई लगाने का सामान (सूई, पिचकारी आदि) को कम से कम आधा घंटा गरम पानी में उबालना जरूरी होता है। इससे वे रोगाणु-मुक्त होते हैं।

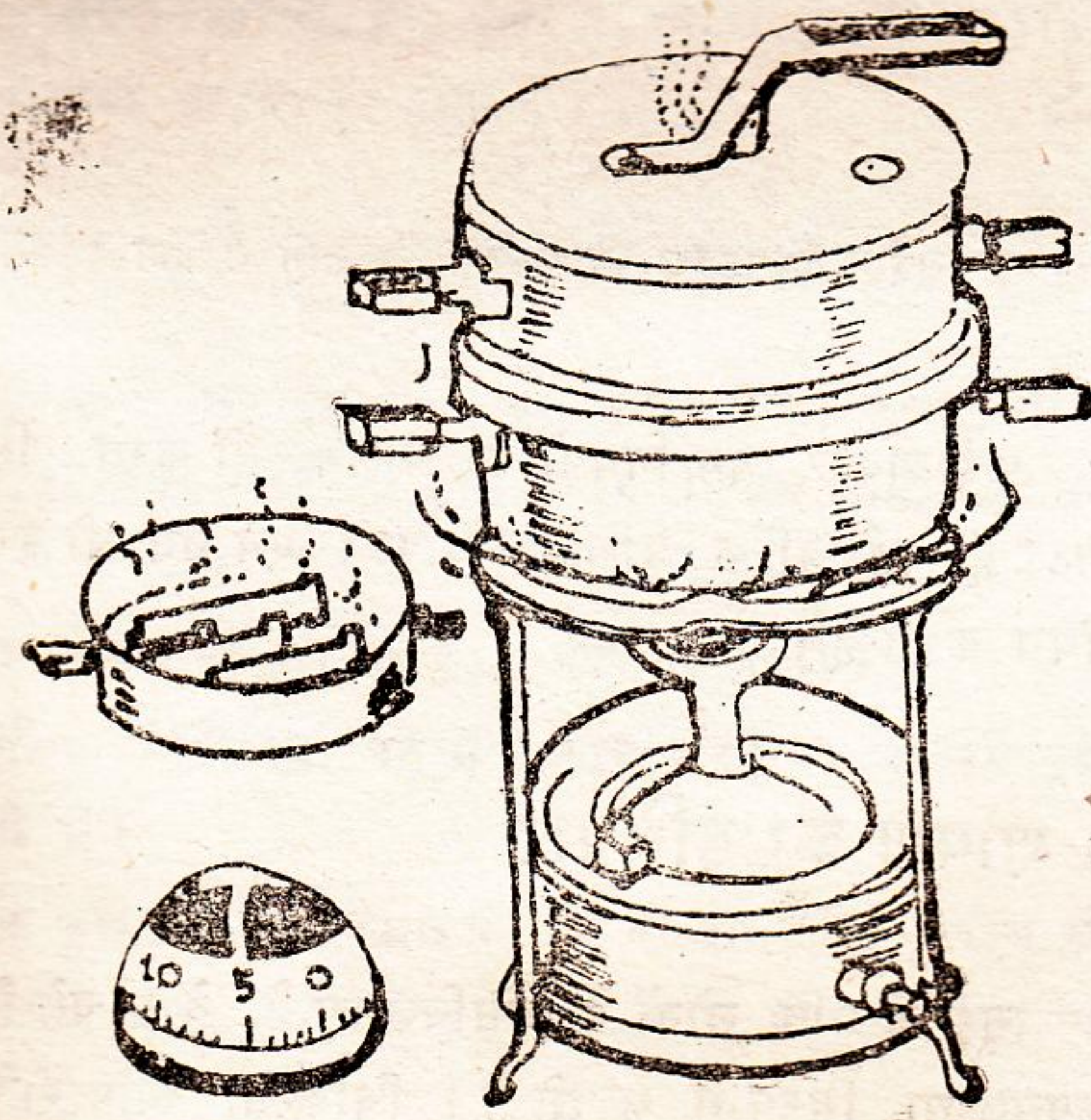

सूई व पिचकारीं को रोगाणु-मुक्त करने का सही तरीका

पिचकारी में दवा खींचते वक्त या सूई लगाते वक्त सूई में या पिचकारी के भीतरी हिस्सा में हाथ नहीं लगाना चाहिए। क्योंकि जितना भी सफाई से हम हाथ धोयें, हाथ की चमड़ी में कुछ न कुछ रोगाणु रह ही जाते हैं।

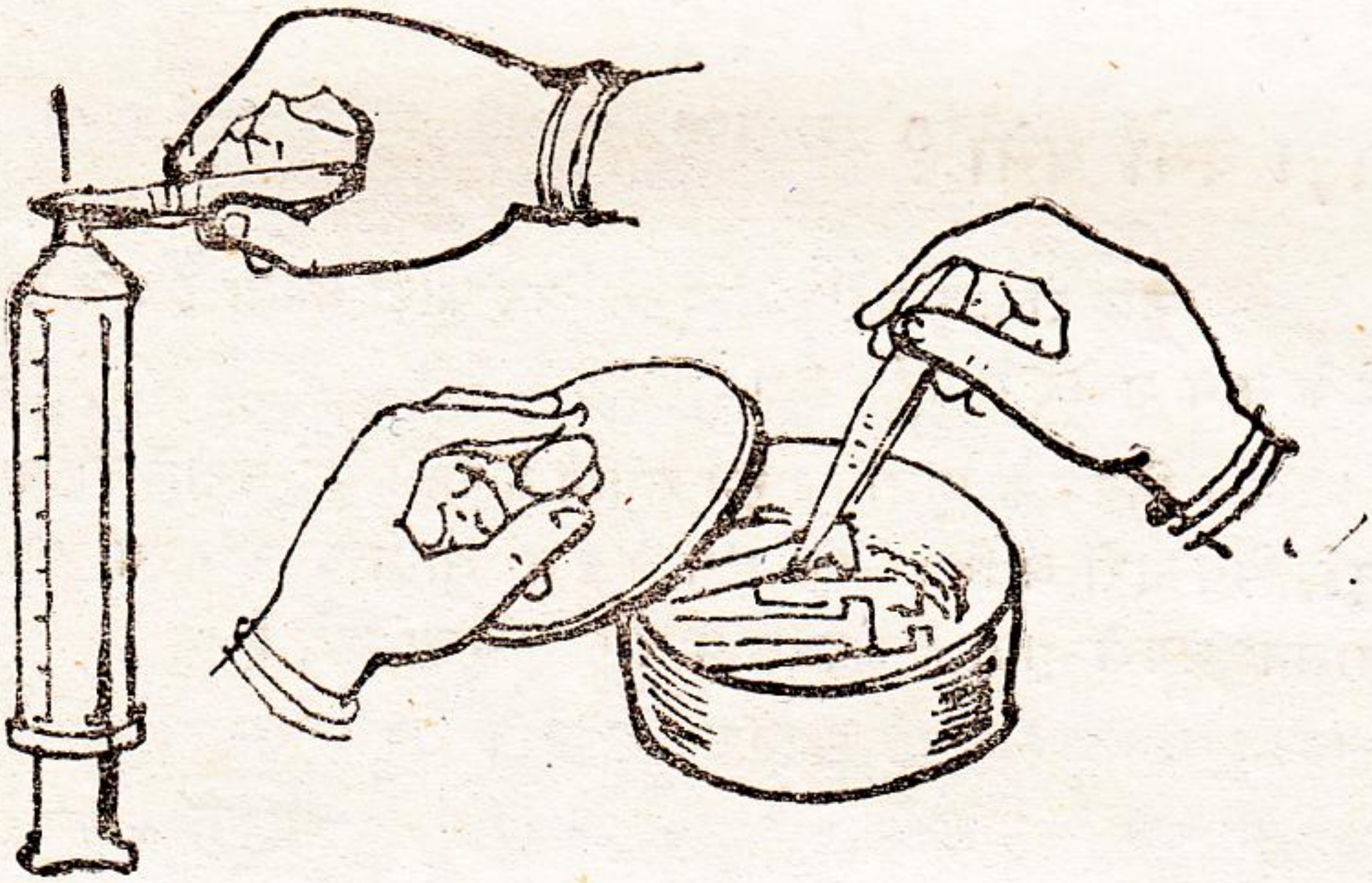

सूई व पिचकारी को पकड़ने का सही तरीका

कई डाक्टर इन नियमों का पालन नहीं करते, सिर्फ सड़क छाप डाक्टर ही नहीं बल्कि प्रशिक्षित डाक्टर एवं नर्स भी इन नियमों का उल्लंघन करते हैं।

सूई : शोषण का हथियार

सूई के प्रति लोगों में अंधविश्वास है, वे सोचते हैं कि सूई गोली, केपसूल या सिरप से अच्छी है। चिकित्सा व्यापारी इस अंध-विश्वास का फायदा लेते हैं।

सूई गोली से दस गुणा से ज्यादा महंगी होती है, लेकिन दोनों में फायदा बराबर ही होता है।

कभी-कभी सूई लाभदायक होती है

- मरीज उल्टी कर रहा है। उसे अगर गोली, केप्सूल या सिरप दी जाय, तो दवा उल्टी के साथ बाहर निकल जायेगी। उसको सूई लगाना जरुरी है।
- बेहोश मरीज को भी सूई द्वारा दवा दी जाती है।
- मानसिक रोगी दवा लेने में इन्कार करने पर भी उसे सूई लगानी पड़ती है।
- पेट के कुछ बड़े आपरेशन के बाद दो-तीन दिन मरीज को मुंह से कुछ नहीं दिया जाता है। उसके लिए भी सूई द्वारा दवा देनी पड़ती है।
- फिर कुछ दवा ऐसी होती है कि उन्हें मुंह से लेने पर वे पेट के पाचक

रस से खराब हो जाती है। इनको भी सूई के रुप में लेना पड़ता है।

- कोई दवा को मुंह से लेने पर अगर पेट मे तकलीफ होती हो, तो उस दवा को सूई के रुप में देना पड़ सकता है।
- मुँह से लेने वाली दवाओं से सूई की दवा कुछ जल्द खून में मिलती है।

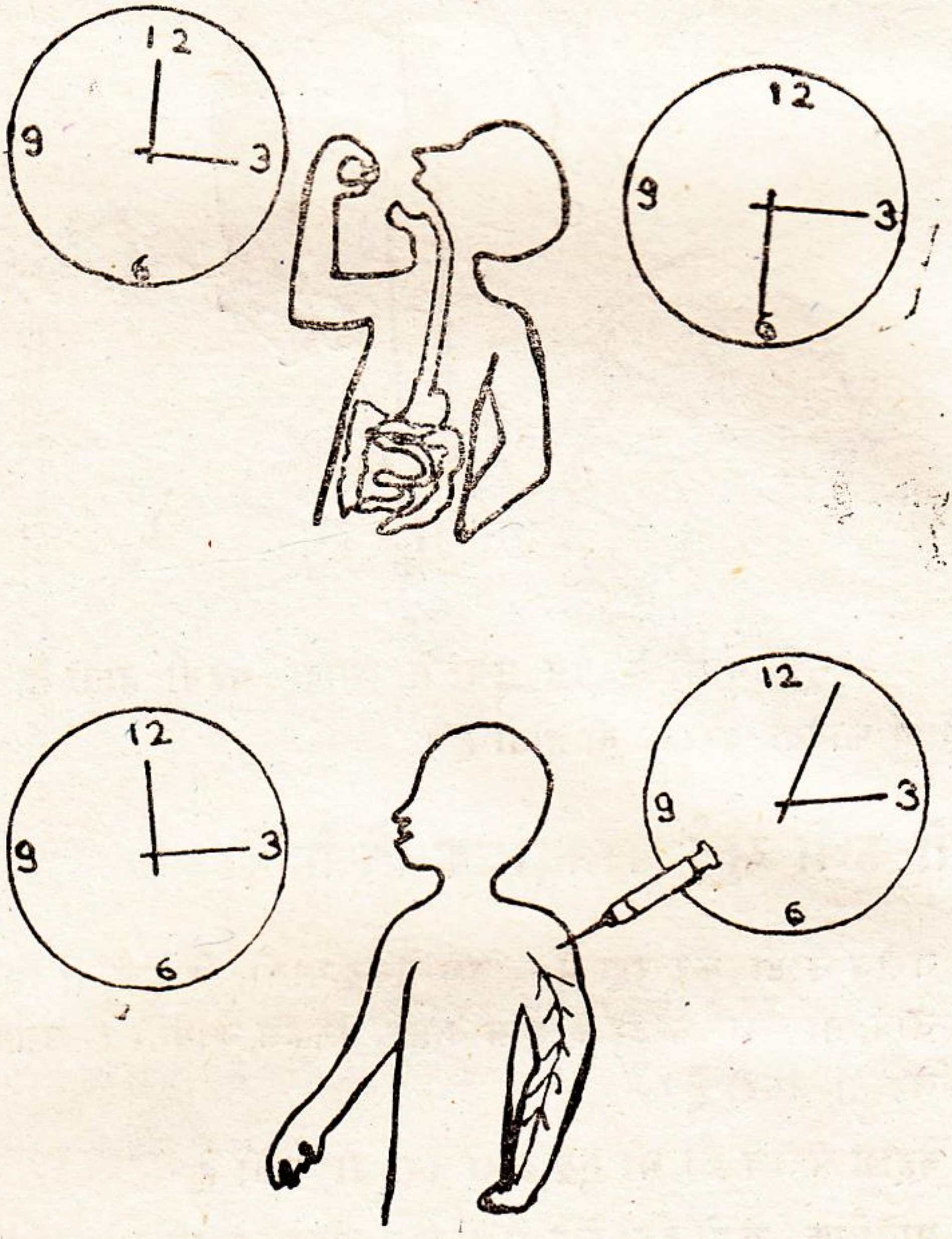

इसलिए कुछ आपात स्थिति में सूई जरुरी होती है।

लेकिन याद रखें :–

सूई के खतरे भी ज्यादा हैं, कीमत भी।
नितांत जरुरी न होने पर सूई न लगवायें ।।

सूई के खतरे

- फोड़ा बनने की बात तो पहले ही कही गयी है।
- कई खतरनाक संक्रामक रोग जैसे कि पीलिया, एड्स, कई गुप्त रोग आदि भी सुई द्वारा फैलते हैं।
- पैनिसिलिन, एम्पिसिलिन और एंटीटाक्सिन जैसी कई ऐसी दवाएं हैं जिनका टीका लगाने से खतरनाक प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। इसलिए पूरी खुराक का टीका लगाने से पहले हमेशा अभिसंवेदनशीलता परीक्षण करना जरुरी है। बांह की चमड़ी में थोड़ी सी दवा सूई द्वारा डालकर पहले यह देखा जाता है कि प्रतिक्रिया हो रही है या नहीं।

प्रतिक्रिया के लक्षण

- सूई के आसपास की जगह लाल होना, सूज जाना, दर्द होना।
- खुजली व ददोरे होना।
- श्वास लेने मे कठिनाई।
- चक्कर आना, उल्टी करने का जी होना।
- साफ-साफ दिखाई न देना।
- कानों में घंटियां बजना या बहरापन।
- पीठ में तेंज दर्द।
- पेशाब करने में कठिनाई।

खतरे से बचने के लिये

- बेहद जरुरी न होने पर सूई न लगवायें ।

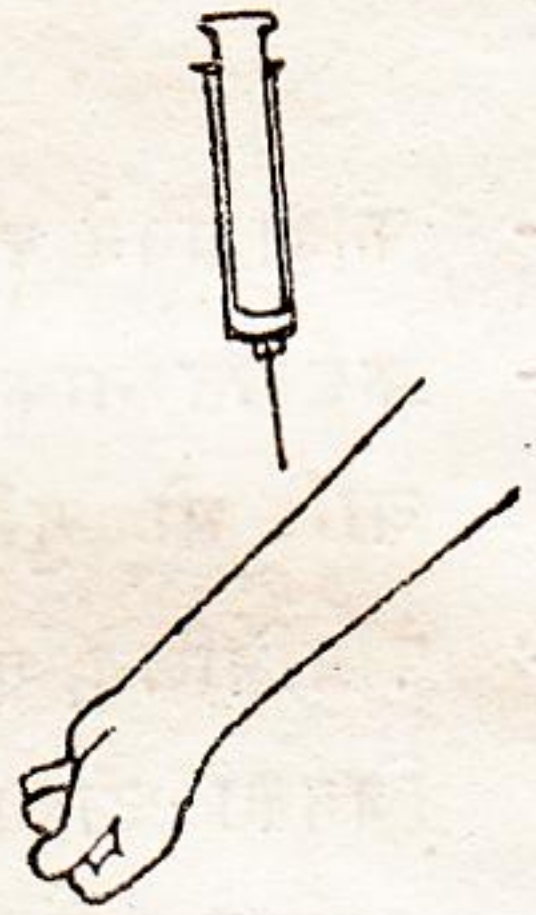

- जिन दवाओं से प्रतिक्रिया होने की आशंका है, उनका पूरा खुराक लगवाने से पहले जांच करवा लें ।

- ऐसे व्यक्ति से ही सूई लगवायें, जो प्रतिक्रिया होने पर सम्हाल सके, प्रतिक्रिया का सही इलाज कर सके ।

सूई कहां लगवायें ?

- बच्चों के जांघ के बीच व बाहरी हिस्से पर ही सूई लगानी चाहिये ।

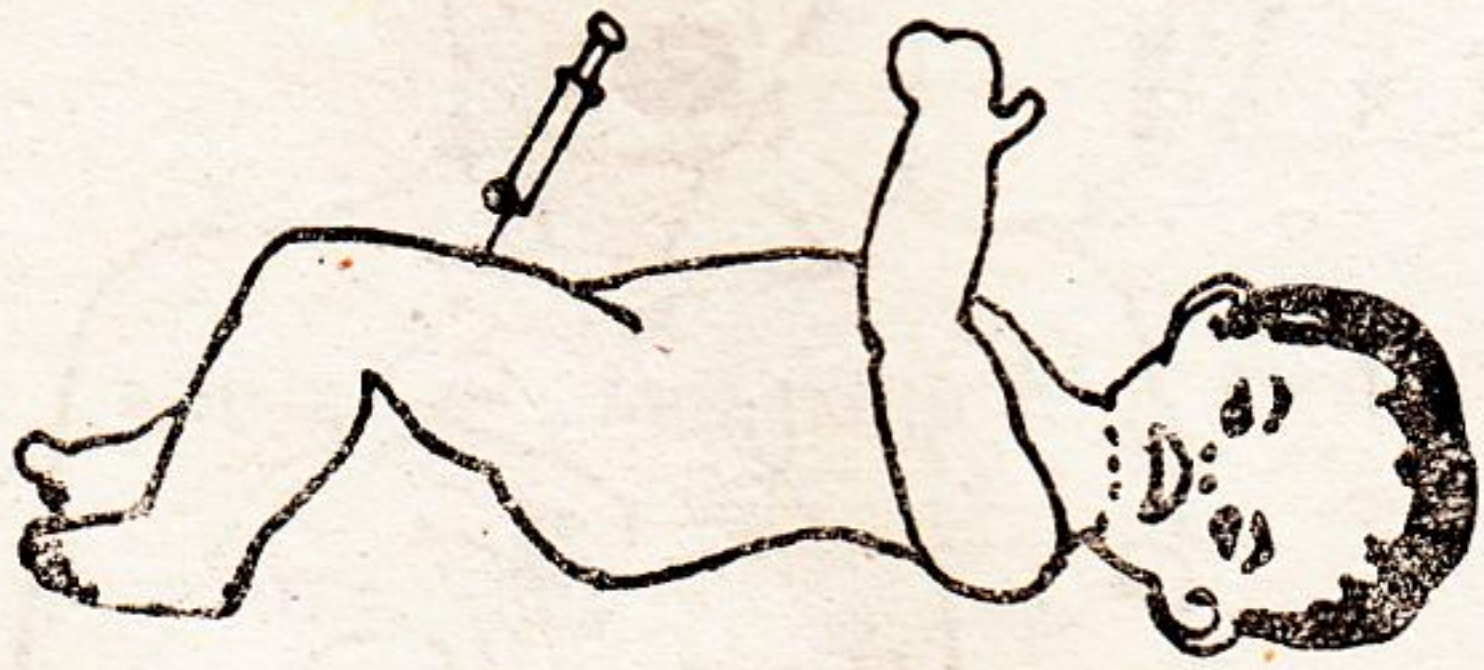

कमर या भुजा में सूई लगवाने से दवा चर्बी में रुक जाती है, फोड़ा बनता है ।

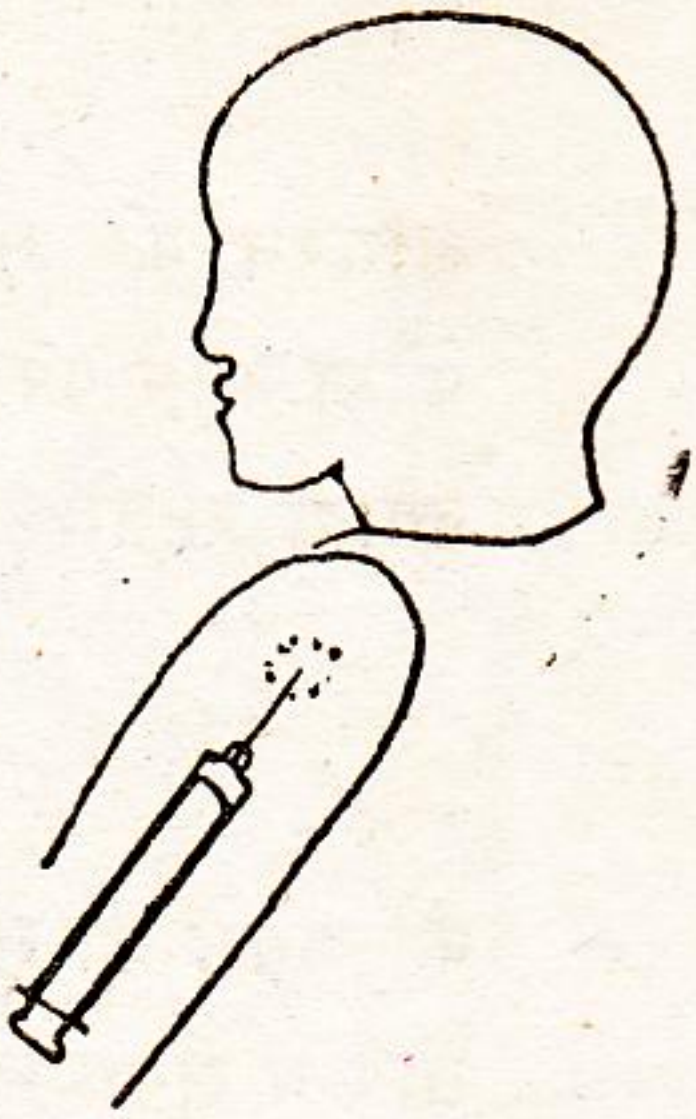

– पूर्ण उम्र के व्यक्ति को भुजा का ऊपरी व बाहरी हिस्सा में सूई लगानी चाहिए।

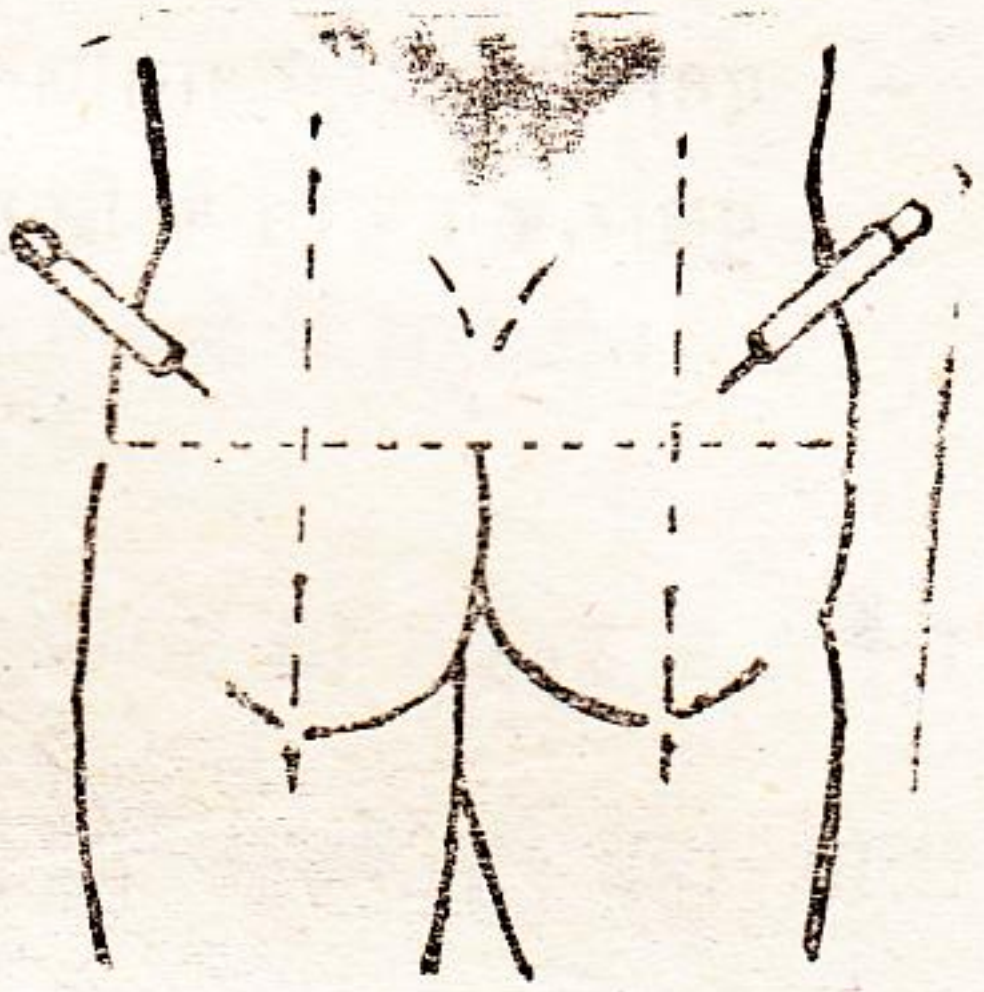

– पूर्ण उम्र के व्यक्ति में दवा की मात्रा ज्यादा होने पर या दवा दर्दनाक होने पर नितम्ब की बाहरी व ऊपरी चौथाई में सूई लगानी चाहियें।

बच्चों को कभी भी नितम्ब में सूई न लगवायें।

जिन दवाओं की सूई कभी नहीं लगानी चाहिये

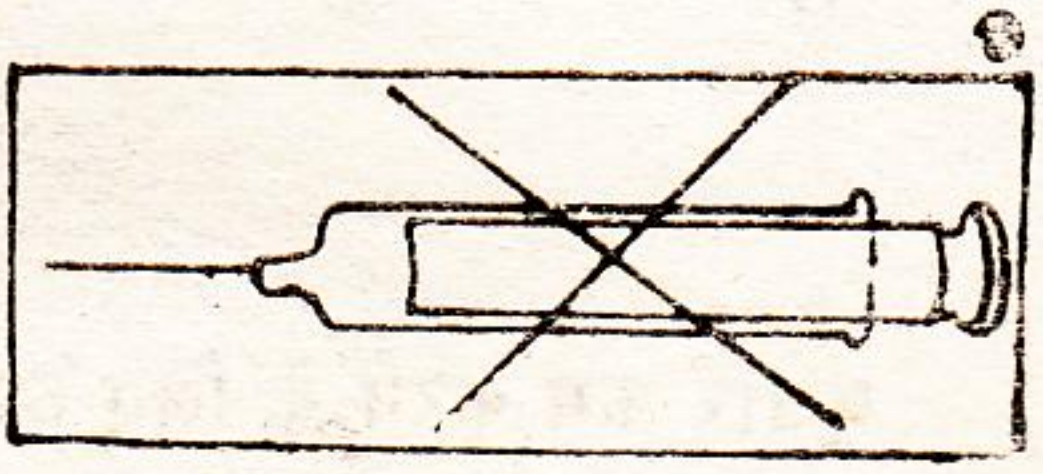

– विटामिन व आयरन की ताकती सूई :

विटामिन या आयरन की सूई की कीमत गोली की कीमत से 20-25 गुणा ज्यादा होती है।

आयरन की सूई से फोड़ा बनने की शंका ज्यादा रहती है।

- कैल्शियम की सूई : कैल्शियम के टीके को अगर नस में बहुत धीरे धीरे न लगाया जाय तो यह जानलेवा हों सकती है। कमर पर लगी सूई की वजह से फोड़ा बन सकता है।

- एनालजिन : एनालजिन की गोली व सूई दोनो ही खतरनाक हैं। बुखार कम करने के लिए इन्हें इस्तेमाल न करें।

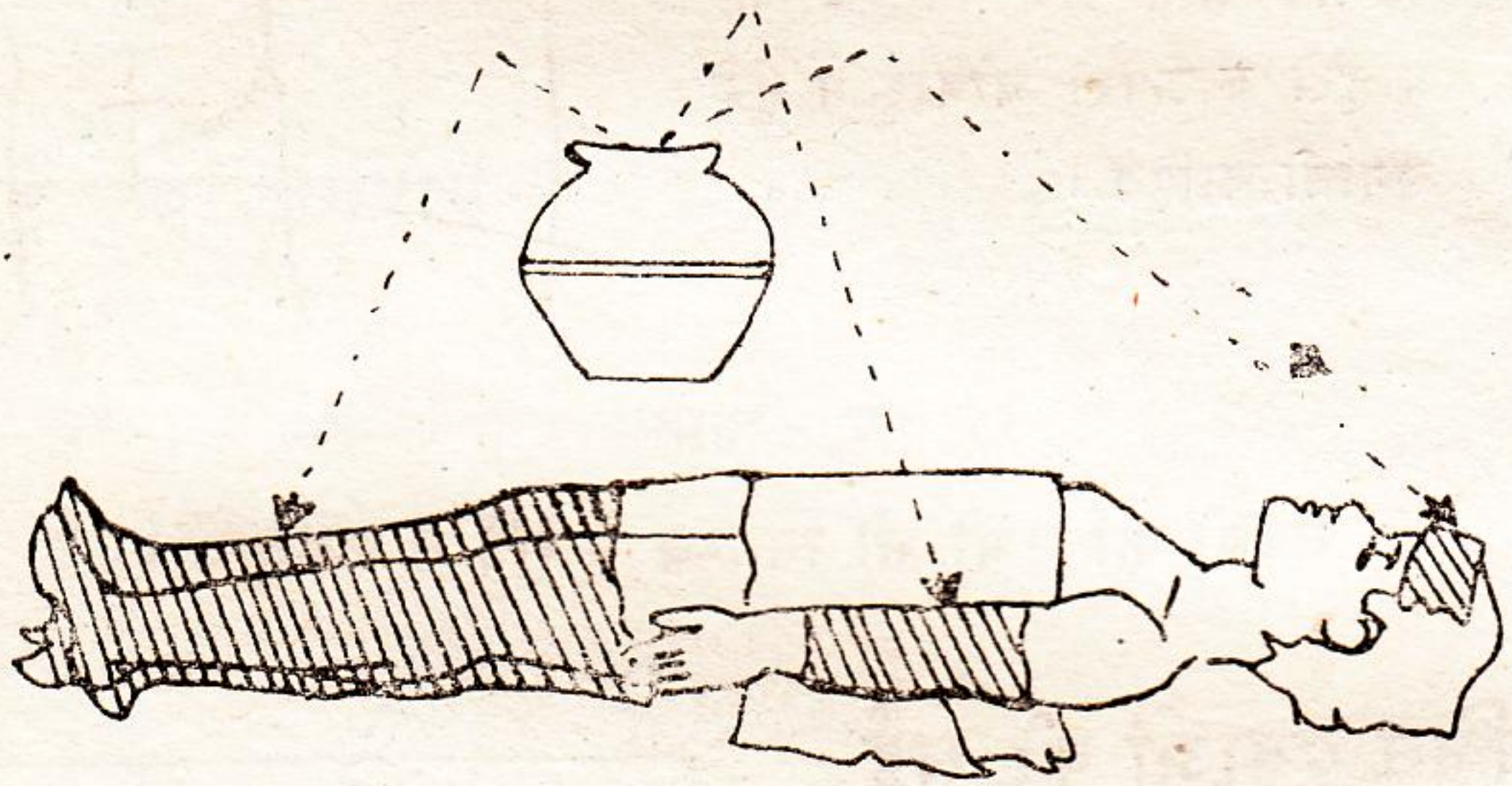

बुखार कम करने के लिए ठंडा पानी से शरीर को पोंछें।

- स्टेप्टोमाइसिन के साथ पैनिसिलिन की मिलीजुली सूई।

- क्लोरामफेनिकल या टेट्रासाइक्लिन।

अन्तःशिरा घोल

कई लोग ताक़त पाने के लिए नस में बाटल चढ़वाते हैं, लेकिन बाटल में पानी और शक्कर व कभी कुछ नमक के अलावा कुछ नहीं रहता है। इसको इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति अगर अच्छी तरह प्रशिक्षित न हो तो मरीज को संक्रामक रोग लगने और उसकी मृत्यु होने का भी डर रहता है।

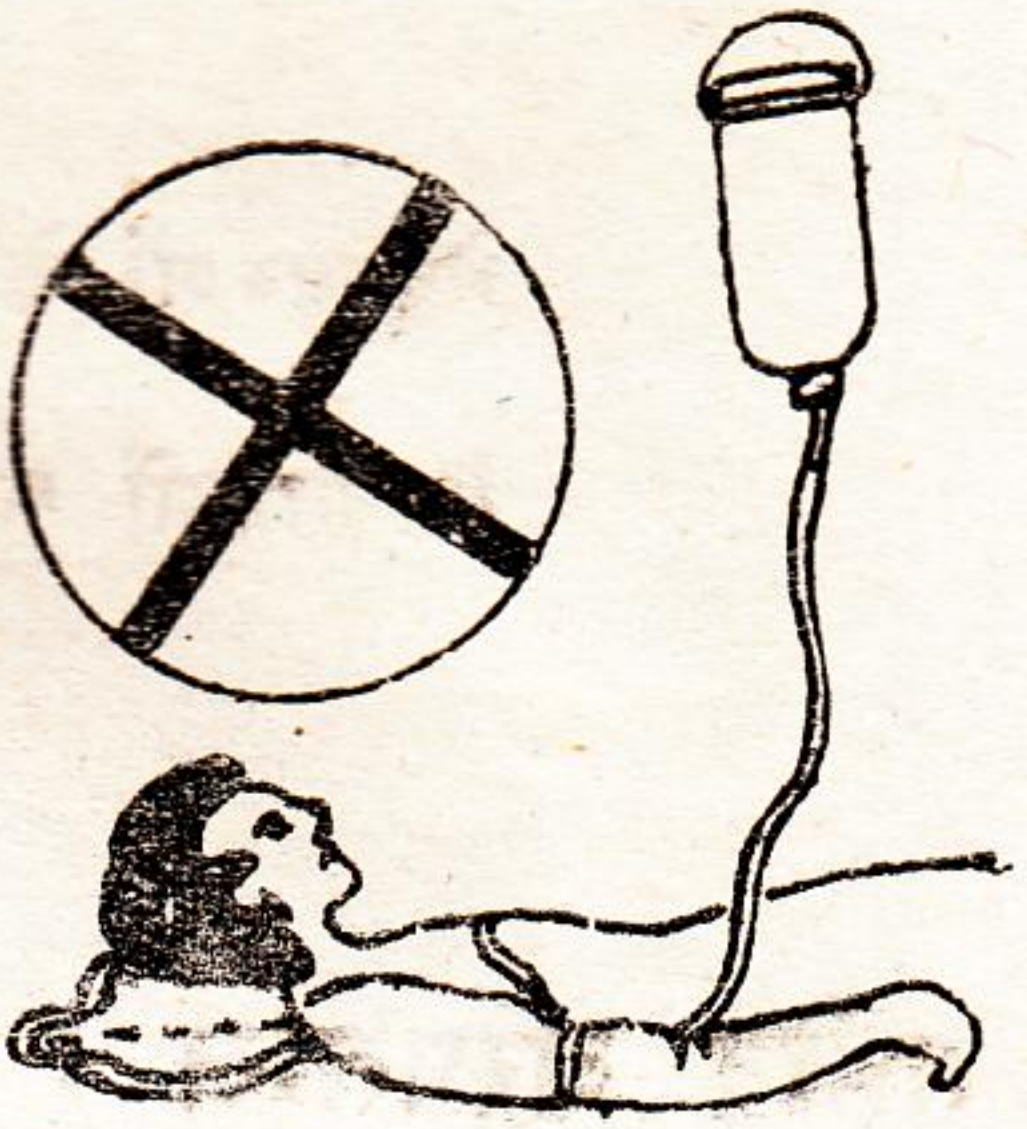

कमजोरी का इलाज सूई या बाटल में नहीं है।

डाक्टर के पास जाकर उन्हें सूई लगवाने को मजबूर न करें।

डाक्टर अगर सूई लगवाना चाहते हैं तो उनको पूछें क्या गोली या केप्सूल से काम नहीं चलेगा।

शहीद अस्पताल के प्रकाशन

★ शहीद अस्पताल — १ रुपया
स्वास्थ्य के रास्ते पर नया कदम

★ टट्टी उल्टी के बारे में
सही जानकारी प्राप्त कीजिए — ५० पैसे

★ टट्टी उल्टी के बारे में
सही जानकारी — १ रुपया

★ गर्भवती महिलाओं के लिए
कुछ जानकारियां — १ रुपया

लोक स्वास्थ्य शिक्षा माला

१. रक्तदान के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

२. बुखार के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

३. खांसी के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

४. मद्यपान के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

५. टीकाकरण के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

६. टी. बी. के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

७. पेप्टिक अल्सर के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये

८. सूई के बारे में
सही जानकारी — २ रुपये